Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

कोटा विकासखंड के कृषि व्यवसाय में प्रचलित परिवहन सुविधाओं का मूल्यांकन

रेखा राय[1], विजय कुमार वैष्णव[2], डॉ. डी.डी. कश्यप[3]
[1, 2] शोधार्थी शा.बिलासा कन्या महाविद्यालय बिलासपुर
[3]शोध निर्देशक शा.बिलासा कन्या महाविद्यालय बिलासपुर
Email-

Manuscript ID:
JRD -2025-170921
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp.106-108
September 2025
Submitted:23 Aug. 2025
Revised: 4 Sept. 2025
Accepted: 21 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

संक्षेपिका :

परिवहन का अर्थ उन गतिविधियों से है जिनके द्वारा व्यक्तियों एवं सामानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाने ले जाने में सहायता मिलती है । अर्थात कच्चे माल को उत्पादन केंद्र तक और उत्पादित सामग्री को बाजार तक पहुंचाने में व्यापार एवं उद्योग की सहायता करती है । परिवहन सुविधा उपलब्ध रहने पर कृषि कार्य में समय लागत एवं नुकसान कम हो जाता है तथा कृषि उत्पादों के विनिमय एवं व्यापार में तीव्रता आ जाती है साथ ही कृषक की कार्य क्षमता बढ़ जाती है । इस प्रकार परिवहन सुविधा से कृषि कार्य प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है तथा परिवहन के अच्छे साधन व्यवसायिक कृषि के विकास में सहायक होती है ।

***आधार शब्द** : लागत, विनिमय, क्षमता, व्यवसायिक उद्यम ।*

अध्ययन क्षेत्र :

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के कोटा विकासखंड जिला मुख्यालय से उत्तर पश्चिम की ओर 40 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है, कोटा विकासखंड $22^0$15′, उत्तर से $22^0$35′, उत्तरी अक्षांश तथा $81^0$50′, पूर्वी देशांतर से $82^0$15′, पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है । जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1179.7 वर्ग कि.मी. है । जिला भू–अभिलेख पत्रक (2010) के अनुसार विकासखंड में कुल भू–स्वामी कृषकों की संख्या 30,199 थी जो 33,771 हेक्टेयर भूमि के स्वामी थे । कुल कृषक में से 65.60% सीमांत कृषक है जिनके पास एक हेक्टेयर से कम कृषि भूमि का स्वामी है तथा 19.36% लघु कृषक है जिनके पास 1 – 2 हेक्टेयर के मध्य कृषि भूमि का स्वामित्व है । इस प्रकार 85% कृषक सीमांत एवं लघु कृषक के श्रेणी में आते हैं, इस विकासखंड का विस्तार पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्र में होने के कारण ज्यादातर बस्तियां एवं खेत दूर–दूर बिखरे हुए हैं ।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध लेख कृषि में प्रचलित परिवहन सुविधाओं का मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य निम्न है ।

1. कृषि कार्य के क्रियान्वयन के लिए प्रयुक्त परिवहन सुविधाओं को ज्ञात करना ।
2. कृषि कार्य के लिए परिवहन सुविधाओं के उपयोग से कृषि विकास पर प्रभाव को ज्ञात करना ।
3. उपयुक्त परिवहन सुविधा के अभाव में कृषकों को होने वाले नुकसानों का आकलन करना ।
4. समय की बचत एवं कार्य क्षमता में वृद्धि के लिए उपयुक्त परिवहन सुविधाओं का चयन करना ।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र को तथ्य पूर्ण एवं प्रमाणिक बनाने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों को आधार बनाया गया है। प्राथमिक आंकड़े प्रतिदर्श सर्वेक्षण, साक्षात्कार एवं छायाचित्र द्वारा संग्रहण किया गया है, तथा द्वितीयक आंकड़े जनगणना पुस्तिका, जिला सांख्यिकीय हस्तपुस्तिका एवं अन्य प्रमाणिक साहित्य से एकत्रित किया गया है ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
रेखा राय, शोधार्थी शा.बिलासा कन्या महाविद्यालय बिलासपुर

How to cite this article:
राय, . रेखा ., वैष्णव, . विजय . कुमार ., & कश्यप, . डी . डी . (2025). कोटा विकासखंड के कृषि व्यवसाय में प्रचलित परिवहन सुविधाओं का मूल्यांकन. Journal of Research and Development, 17(9(A)), 106–108. https://doi.org/10.5281/zenodo.17510696

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17510696
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

कृषि में परिवहन सुविधाओं की आवश्यकता : –

कृषि उत्पादन क्षेत्र में परिवहन सुविधा (3 कि.मी. तक)

1. गोबर खाद, खेत तक परिवहन करने के लिए ।
2. बाजार से बीज एवं रासायनिक खाद पहुंचाने के लिए ।
3. उपज को घर तक पहुंचाने के लिए ।
4. कृषि उपकरण हल, मोटर पंप, पाइप आदि घर से खेत तक पहुंचाने के लिए ।
5. धान का पौधा खेत तक पहुंचाने के लिए ।

उपभोग एवं विक्रय केंद्र के लिए परिवहन सुविधा (15 कि.मी. तक)

1. उपज को घर या खलिहान से मंडी, बाजार या सहकारी केंद्र तक ले जाने के लिए ।
2. निर्माण कार्य हेतु विभिन्न सामग्री बाजार से घर तक पहुंचाने के लिए ।

प्रतिदर्श गांव का सर्वेक्षण : –

कोटा विकासखंड के कृषि में प्रचलित परिवहन सुविधाओं का आकलन करने के लिए विकासखंड के खोंगसरा, बेलगहना, नवागांव, एवं रानीगांव चार ग्रामों का प्रतिचयन किया गया है तथा प्रत्येक गांव के 25 कृषक परिवारों की अनुसूची तैयार कर परिवहन सुविधा संबंधी आंकड़ों को एकत्रित किया गया है । कोटा एक जनजातीय विकासखंड है । चयनित 4 ग्रामों में 21–60% तक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या निवास करती है तथा चयनित ग्रामों की साक्षरता दर 61–70% के बीच है ।

सारणी – 1(जनसँख्या संरचना 2011)

क्र.	ग्राम का नाम	कुल जनसँख्या	लिंगानुपात	अनु.जनजाति % में	साक्षरता % में
1.	खोंगसरा	1052	994	60.00	61.50
2.	बेलगहना	3421	965	44.00	67.10
3.	नवागांव	3600	1021	42.39	69.92
4.	रानीगांव	3291	950	21.36	67.55

स्त्रोत – जनगणना पुस्तिका 2011

चयनित ग्रामों के कुल जनसंख्या में 54.75% व्यक्ति कार्यशील जनसँख्या है, तथा 79.65% व्यक्ति कृषि व्यवसाय से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं ।

सारणी – 2 (व्यावसायिक संरचना 2011)

क्र.	ग्राम का नाम	कुल कार्यशील जनसँख्या % में	कुल मुख्य कार्यशील जनसँख्या % में	कुल कृषक % में	कुल कृषि मजदूर % में
1.	खोंगसरा	55.09	92.18	29.61	56.41
2.	बेलगहना	51.52	96.32	32.14	40.08
3.	नवागांव	51.71	91.79	26.67	57.63
4.	रानीगांव	38.72	84.67	20.33	59.24

स्त्रोत – जनगणना पुस्तिका 2011

चार गाँवों के चयनित 100 परिवारों में से 80% परिवार सीमांत एवं लघु कृषक है, जिनके पास 1–2 हेक्टेयर कृषि जोत है, 12.66% मध्यम वर्ग के कृषक है । जो 2–4 हेक्टेयर जोत आकार वाले हैं तथा 7.33%, 4 हेक्टेयर से अधिक जोत आकार वाले कृषक हैं ।

सारणी क्रमांक – 3 (प्रतिदर्श परिवारों का जोत आकार 2011)

क्र.	ग्राम का नाम	प्रतिदर्श परिवार	सीमान्त	%	लघु	%	मध्यम	%	वृहद	%
1.	खोंगसरा	25	12	48	6	24	5	20	2	8
2.	बेलगहना	25	12	48	6	24	4	16	3	12
3.	नवागांव	25	13	52	7	28	3	12	2	8
4.	रानीगांव	25	13	52	6	28	3	12	3	12

स्त्रोत – खसरा जमाबंदी एवं ग्रामीण सर्वे।

प्रतिदर्श परिवारों द्वारा उत्पादन क्षेत्र में उपयोग की जाने वाली परिवहन सुविधाएं :–

प्रतिदर्श परिवार में चयनित 100 परिवारों द्वारा उत्पादन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के परिवहन सुविधाओं का उपयोग किया जाता है ।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

सारणी क्रमांक – 4 (प्रतिदर्श परिवारों द्वारा परिवहन सुविधा का उपयोग)

क्र.	ग्राम का नाम	प्रतिदर्श परिवार	ट्रेक्टर	%	बैलगाड़ी	%	साईकिल एवं मानव	%	मानव श्रम	%
1.	खोंगसरा	25	05	20	4	16	5	20	13	52
2.	बेलगहना	25	02	8	6	24	4	16	13	52
3.	नवागांव	25	04	16	3	12	5	20	13	52
4.	रानीगांव	25	02	8	2	8	6	24	15	52

स्त्रोत– ग्रामीण सर्वेक्षण

सारणी क्रमांक 4 के अनुसार प्रतिदर्श परिवारों में से 13% कृषक उत्पादन क्षेत्र में कृषि कार्य संचालन के लिए ट्रैक्टर का उपयोग करते हैं । ये कृषक ज्यादातर वृहद जोत आकार वाले होते हैं । दूसरे क्रम में प्रतिदर्श परिवारों के 15% कृषक उत्पादन कार्य में बैलगाड़ी से परिवहन करते हैं यह कृषक मध्यम जोत वाले हैं । तृतीय 20% मानव श्रम एवं साइकिल द्वारा कृषि कार्य करते हैं । इनमें से कुछ कृषक ट्रैक्टर एवं बैलगाड़ी किराये से लेकर परिवहन कार्य करते हैं ।

परिवहन सुविधा की समस्याएं : –

प्रतिदर्श परिवारों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार कृषकों को परिवहन सुविधाओं में निम्नलिखित समस्याएं आती है : –

1. कृषि कार्य के लिए ट्रैक्टर एक उपयोगी परिवहन साधन एवं कृषि यंत्र है परंतु यह महंगी होने के कारण वृहद जोत वाले कृषक तक सीमित है लघु एवं सीमांत कृषक किराये पर इसका उपयोग करते हैं ।
2. बैलगाड़ी परिवहन हेतु इस क्षेत्र का प्रमुख साधन है किंतु इसकी कीमत अधिक होने के कारण मध्यम एवं वृहद जोत आकार वाले कृषक ही उपयोग करते हैं ।
3. सीमांत एवं लघु कृषक जीवकोपार्जन हेतु कृषि करते हैं, आर्थिक स्तर कमजोर होने के कारण कृषि कार्य स्वतः श्रम करके परिवहन का कार्य करते हैं ।
4. प्रतिदर्श ग्रामों के अधिकांश कृषकों के पास कृषि कार्य के लिए अच्छे परिवहन साधन का अभाव है । जिससे कृषि में लाभ कम होता है ।

सुझाव एवं निष्कर्ष : –

प्रतिदर्श ग्रामों के अध्ययन के आधार पर 80% कृषक सीमांत एवं लघु जोत आकार वाले हैं, जो अपना कृषि कार्य श्रम एवं परंपरागत परिवहन साधनों द्वारा करते हैं इसलिए उनको समय एवं श्रम अधिक लगता है। आधुनिक परिवहन के उपकरण काफी महंगे हैं जिनको वह क्रय नहीं कर सकते है । किराये में उपयोग करने पर उत्पादन लागत बढ़ जाता है जिससे उन्हें लाभ की बजाय हानि होती है, आधुनिक समय में कृषि की विधि एवं पद्धति में परिवर्तन हुआ है हर छोटे–बड़े काम अब कृषि यंत्रों से किया जाता है, अतः कृषि विकास को उन्नत व समृद्ध बनाने के लिए आधुनिक कृषि का प्रशिक्षण एवं प्रचार प्रसार की सुगम व्यवस्था एवं उनका मूल्यांकन शासन द्वारा पारदर्शी रूप से करना चाहिए ।

संदर्भ सूची : –

1. जिला सांख्यिकीय हस्तपुस्तिका (2010): जिला सांख्यिकी विभाग, बिलासपुर (छ.ग.)।
2. जनगणना पुस्तिका (2011): जनगणना विभाग छत्तीसगढ़ शासन, रायपुर (छ.ग.)।
3. तिवारी आर.सी. (1994): कृषि भूगोल प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद (उ.प्र.)।
4. सिंह बृजभूषण (1991): कृषि भूगोल ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर (उ.प्र.)।
5. सिन्हा वी.सी. (2018) : व्यावसायिक पर्यावरण एस.बी.पी.डी पब्लिशिंग हाउस, आगरा (उ.प्र.) ।
6. हरदेवी माधव (2019) : छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था और आर्थिक भूगोल छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर(छ.ग.)।
7. वर्मा एल.एन. (2017) : छत्तीसगढ़ का भूगोल छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर (छ.ग.) ।
8. यादव अरुण कुमार (2012): जनसंख्या भूगोल विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।
9. खांडेकर उपमा (2018): छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों की जनसंख्या की
10. राकेश रूखमणी (2014):बिलासपुर जिले में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या संरचना एक भौगोलिक अध्ययन।